तुम्हारा परसाई

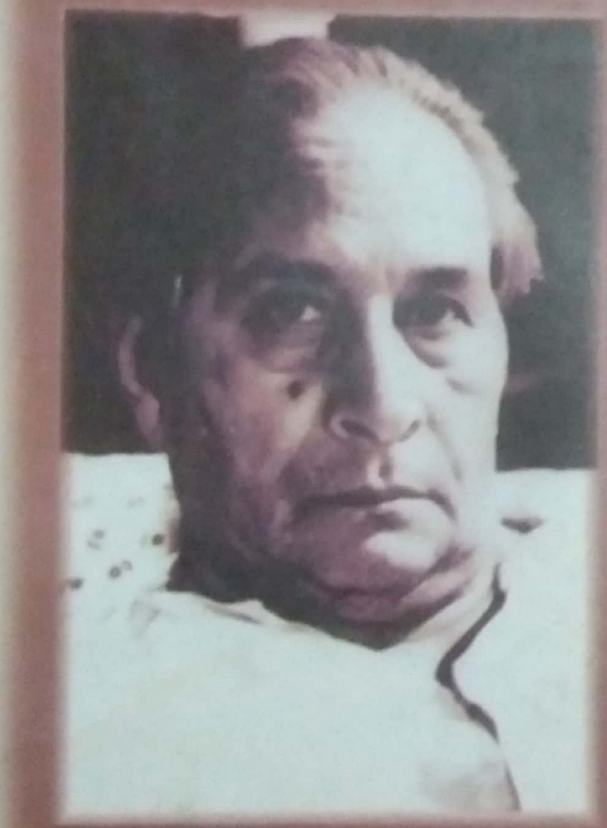

डा० कान्ति कुमार जैन

Scanned with OKEN Scanner

तुम्हारा — परसाई

(हरिशंकर परसाई के जीवन, व्यक्तित्व, परिवेश और
व्यंग्यशीलता के संस्मरणात्मक आख्यान)

कान्तिकुमार जैन

Scanned with OKEN Scanner

प्रिय कमला जी

यानी परसाई जी के कमांडर डॉ. कमला प्रसाद को

ISBN-81-8143-098-0

वाणी प्रकाशन
21-ए, दरियागंज, नई दिल्ली-110002
द्वारा प्रकाशित

प्रथम संस्करण : 2004
© लेखकाधीन
मूल्य : 300.00 रुपये

नागरी प्रिंटर्स, दिल्ली-110032
द्वारा मुद्रित

TUMHARA PARSAI
by Dr. Kanti Kumar Jain

Scanned with OKEN Scanner

अनुक्रमणिका

'तुम्हारा-परसाई' में मेरा क्या है ?

1.	समय के सींगो को मोड़ने के लिए जमानी से जबलपुर की यात्रा : पर सब विदाउट टिकट	013-047
2.	जमना जबलपुर में और करना शुरू बुझे हुए कोयलों को दहकाना	048-056
3.	बनना परसाई का लेखक - पहिली रचना	057-059
4.	अप्रेंटिसी के दिन और सदर के हुक्म की तामील	060-075
5.	गोल अकेले से नहीं बनता	076-077
6.	सभी प्रकार के अलसेटों के खिलाफ	078-079
7.	परसाई ने शेख अब्दुल्ल के लिए क्या किया ?	080-083
8.	एक 'फनी' राइटर	084-085
9.	पहिली मान्यता	086-088
10.	'वसुधा' कैसे निकली, कैसे चली और बंद हुई कैसे ?	089-098
11.	पीने पिलाने के दिन	099-113
12.	परसाई को जानना हो तो जबलपुर को जानिये	114-117
13.	मरण भोज नहीं होगा	118-119
14.	व्यक्ति को प्रवृत्ति में ढालने का कौशल	120-122
15.	कौन कितना धन्य, कौन कितना जघन्य	123-136
16.	'यार, मुझको इतना बेवकूफ मत समझो'	137-146

Scanned with OKEN Scanner

17.	हड्डी टूटने से हिम्मत नहीं टूटती	147-149
18.	बड़ा कौन-गोविन्ददास या शेक्सपियर	150-153
19.	हिन्दी शोध और परसाई	154-158
20.	'जितना यश लिखने से नहीं मिला, उससे ज्यादा पिटने से मिला'	159-165
21.	कौआनामा उर्फ मुक्तिबोध सृजनपीठ पर परसाई जी	166-221
22.	परसाई रचनावली उर्फ संन्यासी का श्राद्ध	222-227
23.	क्या हिन्दी के समर्थन का अर्थ उर्दू का विरोध है ?	228-233
24.	एक बिना लेटरपैड वाला लेखक	234-239
25.	परसाई ने कविता लिखना क्यों छोड़ा ?	240-249
26.	परसाई में परस्पर भाव बहुत था	250-256
27.	परसाई को झटका देना संभव नहीं था	257-258
28.	"शब्द काजू नहीं, सोने के सिक्के होते हैं"	259-263
29.	"हम अच्छी चीजों का निर्यात करते हैं और गंदगी अपने उपयोग के लिए रखते हैं"	264-265
30.	बीसवीं शताब्दी के भारतीय समाज के सत्र न्यायाधीश	266-269
31.	जीवन विवेक के सिकलीगर	270-275
32.	व्यंग्य अपने मूल स्वरूप में क्रोधजन्य न होकर करुणाजन्य है	276-279
33.	परसाई अपने अंतिम दिनों में क्या सोचते थे ?	280-286
34.	व्यंग्य का वंश	287-289
35.	तुम्हारा - परसाई (परसाई जी के पत्र)	290-334

Scanned with OKEN Scanner

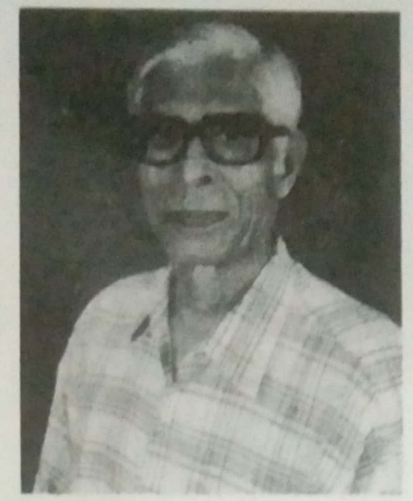

डॉ. कान्तिकुमार जैन

09.09.1932 को देवरी कलां (सागर) में जन्म। बैकुंठपुर (कोरिया) से 1948 में मैट्रिक करने के बाद उच्च शिक्षा सागर विश्वविद्यालय में। मैट्रिक में हिन्दी में विशेष योग्यता के लिए कोरिया दरबार स्वर्णपदक। विश्वविद्यालय की सभी परीक्षाओं में प्रथम श्रेणी, प्रथम स्थान, स्वर्ण पदक। 1956 से मध्यप्रदेश के अनेक महाविद्यालयों में शिक्षण कार्य। 1978 से 1992 तक डॉ. हरीसिंह गौर वि. वि. में माखन लाल चतुर्वेदी पीठ पर हिन्दी के प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष। अब सेवानिवृत्त। 'छत्तीसगढ़ की जनपदीय शब्दावली' पर शोधकार्य। 'छत्तीसगढ़ी : बोली, व्याकरण और कोश', 'नयी कविता', 'भारतेन्दु पूर्व हिन्दी गद्य', 'कबीरदास', 'इक्कीसवीं शताब्दी की हिन्दी' कुछ चर्चित पुस्तकें। बुन्देलखंड की लोक संस्कृति की संपादित पत्रिका 'ईसुरी' को अंतर्राष्ट्रीय कीर्त्ति। मुक्तिबोध और परसाई के मित्र। फिलहाल संस्मरण लिखने में व्यस्त। 'लौटकर आना नहीं होगा' संस्मरणों की पहिली ही पुस्तक से संस्मरणों की चर्चा और संस्मरण हिन्दी गद्य की केन्द्रीय विधा के रूप में प्रतिष्ठित। 'जो कहूंगा, सच कहूंगा' संस्मरणों की अगली पुस्तक शीघ्र प्रकाश्य।

पता - विद्यापुरम्, मकरोनिया कैंप, सागर 470004
दूरभाष (07582)-230354

Scanned with OKEN Scanner

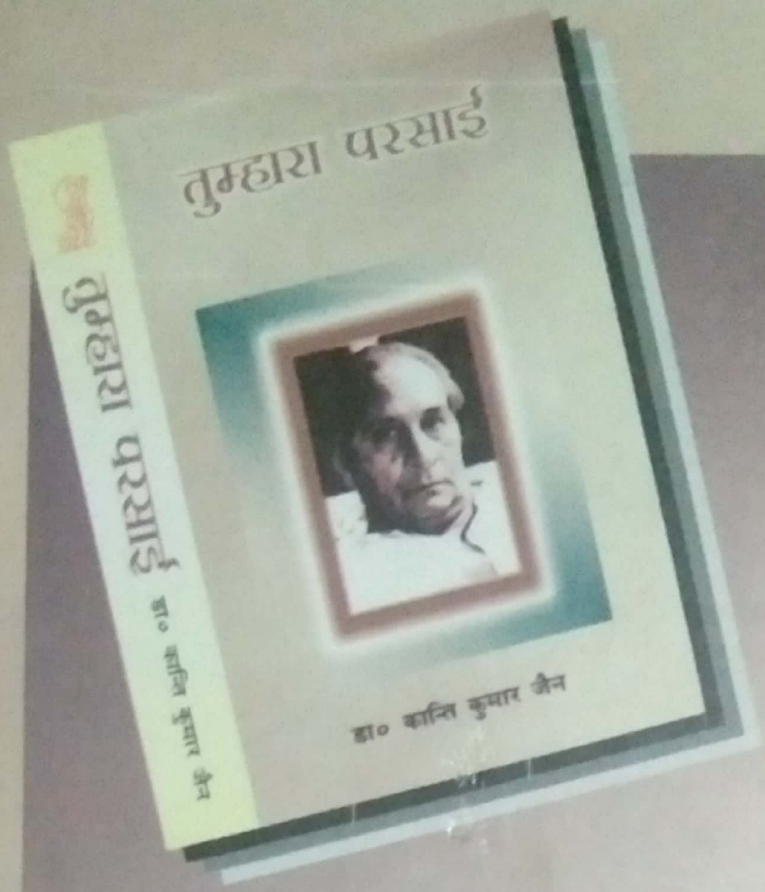
तुम्हारा परसाई
डा० कान्ति कुमार जैन